रवियोग

यदि किसी विशेष कार्य के लिए इंगित नक्षत्र की प्राप्ति नही होती है तो **रवियोग** का प्रयोग करना चाहिए, जो एक तात्कालिक शुभ योग है और सभी प्रकार के कुयोगों की अशुभता को न्यूनतम या समाप्त करने में सहायक होता है। सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र यदि 4,6,9,10,13 और 20 हो, तो उस दिन रवि योग बनता है। आवश्यक कार्य हो और अनुकूल नक्षत्र न हो तो गो दान या गो के लिए चारादान करके कार्य किया जा सकता है।

यदि आपके कार्य के अनुकूल नक्षत्र उपलब्ध हो जाए तो उसमें अपने जन्म नक्षत्र आदि से भी तुलना करके देख लेना चाहिए। जिस नक्षत्र में आपका जन्म हुआ है, उसे जन्म नक्षत्र कहते हैं। उसके बाद क्रमशः सम्पत, विपत (अशुभ), क्षेम, प्रत्यरि (अशुभ), साधक, वध (अशुभ), मैत्र और अतिमैत्र की पहली आवृति उसके बाद दूसरी आवृति और अंत में तीसरी आवृति होती है। ध्यान रहे विपत, प्रत्यरि और वध शुभ नही होते, इसलिए इन नक्षत्रों में कार्य आरंभ न करें, यदि पहली आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र है तो 60 घटी (पूरा दिन) त्याज्य है, दूसरी आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र है तो पहली 20 घटी (8 घण्टे) त्याज्य हैं और यदि तीसरी आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र पड़ता है तो भी कार्य किया जा सकता है। यदि कार्य अति आवश्यक है और आपके अनुकूल नक्षत्र आपके जन्म नक्षत्र की पहली ही आवृति के अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) में आता है तो परिहारों का प्रयोग करके अपना कार्य किया जा सकता है जैसे विपत के लिए गुड़ दान करना, प्रत्यरि के लिए नमक दान करना और वध के लिए स्वर्ण या काले तिल दान करना चाहिए।